त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका

लेखापरीक्षा ज्ञानोदय

सोलहवाँ संस्करण

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

सी 25, 8 वी मंजिल, ऑडिट भवन, बीकेसी, बांद्रा पूर्व, मुंबई – 400 051

फ़ैक्स-02226573814, ई-मेल pdcamumbai@cag.gov.in

लेखापरीक्षा ज्ञानोदय परिवार

मुख्य संरक्षक

डॉ संदीप रॉय

महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा

संरक्षक

मो. फैजान नय्यर, निदेशक/ऑयल

श्री सागर विजय काळे, उप निदेशक/मुख्यालय

संपादक-मंडल

श्रीमती स्वपना फुलपाड़िया	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती मीना देशप्रभु	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती विद्या मुरलीधरन	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
श्रीमती कल्पना असगेकर	पर्यवेक्षक
सुश्री पूजा साव	कनिष्ठ अनुवादक

(रचनाओं की मौलिकता एवं विचार से संबंधित पूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकारों का है-संपादक मंडल)

अनुक्रमणिका

संदेश	डॉ संदीप रॉय, महानिदेशक
संदेश	मो. फैजान नय्यर, निदेशक/ऑयल
संदेश	श्री सागर विजय काळे, उप निदेशक/मुख्यालय
संदेश	श्री अनुपम जाखड़, उप निदेशक
संपादकीय	सुश्री पूजा साव
विश्व का सबसे छोटा देशः सीलैंड	सुश्री व्ही सरला
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एवं बाबू वीर कुंवर सिंह	श्री अमरनाथ गुप्ता
हिंदी के प्रचार-प्रसार में विज्ञापन की भूमिका	सुश्री पूजा साव
वो पुराने दिन	श्री अरुण कुमार साव
प्रकृति मेरी शिक्षक है	श्री शरद धनगर
हां वो मेरी मां है	इमरान खाटीक
मां के बिना.....	श्री रवि कुमार
भारत में घरेलू पर्यटन	श्री सचिन चौहान
आपके पत्र	

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि कार्यालय द्वारा तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 16वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को गति प्रदान करने तथा अपनी राजभाषा के लिए गौरवपूर्ण वातावरण तैयार करने में कार्यालयीन पत्रिकाओं का काफी योगदान होता है।

भारतीय संविधान द्वारा राजभाषा के रूप में मान्यता प्राप्त हिंदी के प्रति हम सभी का यह दायित्व है कि कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का प्रयोग करने के साथ-साथ इसके प्रचार-प्रसार हेतु यथासंभव प्रयास करें। हिंदी का स्वरूप कठिन तथा जटिल तब हो जाता है जब हिंदी में मूल कार्य न करके अनुवाद का प्रयोग किया जाता है। अतः कार्यालय में अन्य भाषाओं के सहज एवं प्रचलित शब्दों का भी प्रयोग करना चाहिए जिससे यह प्रत्येक व्यक्ति के मन तक अपनी पहुंच बना सके। सभी कार्मिकों को राजभाषा हिंदी के विकास हेतु अपना यथासंभव योगदान देना चाहिए।

अंत में मैं उन सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से पत्रिका के 16वें अंक को सफल बनाने में सहयोग किया है। प्राप्त रचनाओं के सुंदर प्रस्तुतीकरण हेतु संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

मुझे आशा है कि हम सभी एक साथ मिलकर पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास हेतु सदैव प्रयत्नशील रहेंगे।

(डॉ संदीप रॉय)

महानिदेशक

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि कार्यालय द्वारा त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 16वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका का समयानुसार निरंतर प्रकाशन कार्यालय के राजभाषा के विकास में योगदान को प्रदर्शित करता है। पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा में कार्य करने हेतु प्रोत्साहित करने की दिशा में किए जा रहे कार्यों में से एक है जिसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

केंद्र सरकार के सभी कार्मिकों का यह कर्तव्य है कि वे राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने तथा प्रयोग के लिए प्रोत्साहित करने हेतु यथासंभव प्रयास करें। आज हिंदी का प्रयोग वैश्विक स्तर पर भी बढ़ रहा है। हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है जिसको उसी प्रकार लिखा जाता है जिस प्रकार उसका उच्चारण किया जाता है। विभिन्न भाषा के शब्दों को स्वयं में समाहित करते हुए हिंदी एक संपर्क भाषा के रूप में एक उच्च स्तर पर पहुंच गई है। हमें अपने कार्यालय के काम-काज को यथासंभव राजभाषा में करते हुए इसके विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देना चाहिए। मैं कार्यालय के इस कार्य की सराहना करता हूं तथा हिंदी के प्रोत्साहन के लिए लगातार ऐसे प्रयास चलते रहें, ऐसी कामना करता हूं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(मो. फैजान नय्यर)
निदेशक/ऑयल
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि कार्यालय राजभाषा हिंदी के विकास में एक और कदम बढ़ाते हुए त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 16वें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में पत्रिकाओं का योगदान महत्वपूर्ण है। पत्रिकाएं अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मन में राजभाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करती हैं तथा राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन हेतु जारी निर्देशों से अवगत कराती है।

हिंदी एक सहज भाषा है। कार्यालय में हिंदी के प्रयोग को सरल बनाने हेतु अन्य भाषा के प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए। अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों के प्रयोग से कार्मिकों में रुचि जागृत होती है तथा हिंदी की शब्दावली में भी वृद्धि होती है। आवश्यकतानुसार इलेक्ट्रॉनिक साधनों का प्रयोग करके राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाया जा सकता है। हमारे कार्यलाय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु पत्रिकाओं के प्रकाशन के साथ-साथ विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। हमारे संयुक्त प्रयासों से राजभाषा हिंदी के विकास हेतु सार्थक परिणाम प्राप्त होंगे।

पत्रिका के इस अंक के सफल प्रकाशन में सहयोग करने वाले समस्त रचनाकारों को धन्यवाद तथा संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

मैं यह आशा करता हूं कि ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का 16वां अंक आप सभी के लिए रुचिकर एवं ज्ञानप्रद होगा।

(सागर विजय काळे)

उप निदेशक/मुख्यालय

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

संदेश

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई कि कार्यालय द्वारा त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 16वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह प्रकाशन कार्यालय के राजभाषा के विकास के प्रति उत्साह को प्रदर्शित करता है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में पत्रिकाओं का प्रकाशन अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है।

कार्यालय के इस कार्य की सराहना करते हुए हिंदी के प्रोत्साहन के लिए लगातार ऐसे प्रयास चलते रहें, ऐसी कामना करता हूं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(अनुपम जाखड़)
उप निदेशक
उप कार्यालय निदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, देहरादून

संपादकीय

हमारे कार्यालय की त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का 16वां अंक आप सभी के समक्ष सादर प्रस्तुत है। यह पत्रिका हम सभी के सम्मिलित प्रयासों का ही परिणाम है। राजभाषा हिंदी के विकास हेतु पत्रिका का प्रकाशन एक सार्थक प्रयास है। पत्रिकाएं कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों में राजभाषा हिंदी के प्रति रुचि जागृत करने के साथ-साथ छुपी हुई सृजनात्मक प्रतिभाओं को उजागार करने के लिए सार्थक सिद्ध होती है।

हिंदी भाषा का प्रयोग राष्ट्रीय स्तर के साथ-साथ अब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी बढ़ रहा है। हिंदी भाषा में अन्य भाषाओं के शब्दों को ग्रहण करने की अद्भूत क्षमता है जो इस भाषा की सबसे बड़ी शक्ति है। हिंदी का प्रयोग तीव्र गति से बढ़ रहा है तथा हमारे सहयोग के फलस्वरूप राजभाषा को उचित स्थान अवश्य प्राप्त होगा।

सभी उच्च अधिकारियों के प्रति हार्दिक आभार जिनके प्रोत्साहन एवं सहयोग के फलस्वरूप पत्रिका का सफल प्रकाशन किया जा सका है। सभी रचनाकारों को सादर धन्यवाद जिन्होंने अपने रचना कौशल को प्रदर्शित करते हुए अपनी रचनाओं को पत्रिका में शामिल करने हेतु प्रस्तुत किया है। आप सभी से अनुरोध है कि पत्रिका के आगामी अंकों के लिए भी आप अपना सहयोग देते रहें।

आशा है कि पूर्व अंकों की तरह पत्रिका का यह अंक भी पाठकों के लिए रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक होगा। पाठकों से हमारा यह विनम्र अनुरोध है कि पत्रिका को पढ़ने के पश्चात अपने अमूल्य विचारों से हमारा उत्साहवर्धन करें तथा अपने विचारों से हमें अवगत कराएं।

पूजा साव

कनिष्ठ अनुवादक

सुश्री व्ही सरला

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

विश्व का सबसे छोटा देशः सीलैंड

सीलैंड एक गैर-मान्यता प्राप्त सूक्ष्म राष्ट्र **है** । सीलैंड इंग्लैंड के सफोल्क तट से लगभग 6.5 मील दूर उत्तरी सागर में **एक पूर्व अपतटीय मंच** में स्थित है जिसे द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मन हमलावरों से तट की रक्षा के लिए 1942 में बनाया गया था।

इतिहास

1943 में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान रफ़्स स्तंभ का निर्माण यूनाइटेड किंगडम द्वारा मौनसेल फ़ोर्ट्स के रूप में जर्मन माइन-लेइंग एयरक्राफ्ट के खिलाफ आस-पास के मुहानों में महत्वपूर्ण नौवहन मार्ग की रक्षा के लिए किया गया था। इसमें एक फ़्लोटिंग पोंटून बेस शामिल था जिसमें एक डेक से जुड़े दो खोखले स्तंभों की एक अधिरचना थी, जिस पर अन्य संरचनाओं

को जोड़ा जा सकता था। यह लगभग 13 किमी सफ़क के तट से तत्कालीन 6 किमी अंतर्राष्ट्रीय जल में है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 150-300 रॉयल नेवी कर्मियों द्वारा इस सुविधा पर कब्जा कर लिया गया था ।

1967 में, पूर्व ब्रिटिश सेना प्रमुख रॉय बेट्स ने सीलैंड को खरीदा और इसे एक स्वतंत्र संप्रभु राज्य घोषित किया। उन्होंने अपना नाम सीलैंड का प्रिंस रॉय रखा और अपने पासपोर्ट और टिकटें जारी कीं। एक संप्रभु राज्य के रूप में सीलैंड की स्थिति विवादित है। यूनाइटेड किंगडम सीलैंड को एक देश के रूप में मान्यता नहीं देता है, न ही कोई अन्य राष्ट्र। हालाँकि, सीलैंड का अपना झंडा, मुद्रा और सरकार है।

सीलैंड पिछले कुछ वर्षों में कई घटनाओं का स्थल रहा है। 1978 में, डच कमांडो के एक समूह ने सीलैंड पर कब्ज़ा करने का प्रयास किया लेकिन असफल रहे। 1990 में, सीलैंड पर ब्रिटिश पुलिस ने छापा मारा, जिसने रॉय बेट्स के बेटे, माइकल को गिरफ्तार कर लिया। अपने अशांत इतिहास के बावजूद, सीलैंड **एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल बना हुआ है।** पर्यटक मंच पर नाव यात्रा कर सकते हैं और इसके इतिहास के बारे में जान सकते हैं।

व्यवसाय और स्थापना

रफ़्स स्तंभ पर फरवरी और अगस्त 1965 में जैक मूर और उनकी बेटी जेन ने समुद्री डाकू स्टेशन वंडरफुल रेडियो लंदन की ओर से कब्जा कर लिया।

2 सितंबर 1968 को किले पर एक ब्रिटिश नागरिक और समुद्री डाकू रेडियो प्रसारक मेजर पैडी रॉय बेट्स का कब्जा था, जिन्होंने समुद्री डाकू प्रसारकों के प्रतिस्पर्धी समूह को बाहर कर दिया था। बेट्स का इरादा अपने समुद्री डाकू रेडियो स्टेशन को मंच से प्रसारित करना था - जिसका नाम रेडियो एसेक्स कहा जाता है।आवश्यक उपकरण होने के बावजूद उन्होंने कभी प्रसारण शुरू नहीं किया। बेट्स ने रफ़्स स्तंभ की स्वतंत्रता की घोषणा की और इसे सीलैंड की रियासत माना।

1968 में ब्रिटिश कामगारों ने मंच के पास एक नौवहन बोया की सेवा के लिए बेट्स ने अपने क्षेत्रीय जल होने का दावा किया। पैडी रॉय बेट्स के बेटे माइकल बेट्स ने पूर्व किले से चेतावनी गोली चलाकर कामगारों को डराने की कोशिश की। जैसा कि बेट्स उस समय एक ब्रिटिश विषय था, उसे घटना के बाद आग्नेयास्त्रों के आरोप में इंग्लैंड के अदालत में बुलाया गया था। लेकिन जब अदालत ने फैसला सुनाया कि मंच, जिसे बेट्स अब "सीलैंड" कह रहे थे,

तत्कालीन 6 किमी देश के पानी की सीमा होने के कारण ब्रिटिश क्षेत्रीय सीमा के बाहर था, और मामला आगे नहीं बढ़ सका।

1985 में बेट्स ने सीलैंड के लिए एक संविधान पेश किया, जिसके बाद एक राष्ट्रीय ध्वज, एक राष्ट्रगान, एक मुद्रा और पासपोर्ट पेश किए गए।[1]

2015 में बेट्स ने कहा कि सीलैंड की आबादी सामान्य रूप ***से दो लोग*** **है।**

1978 का हमला और सीलैंड विद्रोही सरकार

अगस्त 1978 में अलेक्जेंडर आखेनबाख, जो खुद को सीलैंड के प्रधानमंत्री के रूप में वर्णित करते हैं, ने सीलैंड पर हमले का नेतृत्व करने के लिए कई जर्मन और डच भाड़े के सैनिकों को नियुक्त किया, जबकि बेट्स और उनकी पत्नी को सीलैंड की बिक्री पर चर्चा करने के लिए आखेनबाख द्वारा ऑस्ट्रिया में आमंत्रित किया गया था। आखेनबाख ने साथी जर्मन और डच व्यापारियों के साथ सीलैंड को एक लक्जरी होटल और कसीनो में बदलने की योजना पर बेट्स से असहमति जताई थी। उन्होंने स्पीडबोट, व्यक्तिगत जलयानों और हेलीकाप्टरों के साथ मंच पर धावा बोल दिया और बेट्स के बेटे माइकल को बंधक बना लिया। माइकल सीलैंड पर फिर कब्जा करने और आखेनबाख और मंच पर छिपे हथियारों का उपयोग करने वाले भाड़े के सैनिकों को पकड़ने में सक्षम थे। आखेनबाख, एक जर्मन वकील, जिनके पास सीलैंड पासपोर्ट था, पर सीलैंड के खिलाफ देशद्रोह का आरोप लगाया गया था, और जब तक वे 75000 जर्मन मार्क ($35000 या £23000 से अधिक) का भुगतान नहीं करेंगे, तब तक उन्हें वहीं रोककर रखा गया। जर्मनी ने तब अपने लंदन दूतावास से एक राजनयिक को आखेनबाख की रिहाई पर बातचीत करने के लिए सीलैंड भेजा। कई हफ्तों की बातचीत के बाद रॉय बेट्स रिहाई के लिए राज़ी हो गए और बाद में दावा किया कि राजनयिक यात्रा जर्मनी द्वारा सीलैंड की वास्तविक मान्यता का गठन करती है।

बिक्री का प्रयास

जनवरी 2007 में स्वीडिश विचारक समूह पिरातबायरान द्वारा स्थापित मनोरंजन मीडिया और सॉफ़्टवेयर की डिजिटल सामग्री की एक ऑनलाइन अनुक्रमणिका द पाइरेट बे ने स्वीडन में कठोर कॉपीराइट उपायों के बाद सीलैंड को खरीदने का प्रयास किया, जिससे उन्हें कहीं और संचालन के आधार की तलाश करने के लिए मजबूर होना पड़ा। 2007 और 2010 के बीच

सीलैंड को स्पेनिश एस्टेट कंपनी इनमोनारंजा के माध्यम से बिक्री के लिए पेश किया गया था, जिसमें उन्होंने €75 करोड़ (£ 60 करोड़) की मांग की थी।

संस्थापक की मृत्यु

9 अक्टूबर 2012 को 91 वर्ष की आयु में रॉय बेट्स का निधन हो गया; वह कई वर्षों से अल्जाइमर रोग से पीड़ित थे। जोआन बेट्स, रॉय बेट्स की पत्नी, का 10 मार्च 2016 को 86 वर्ष की आयु में एसेक्स नर्सिंग होम में निधन हो गया। उनका बेटा माइकल अब खुद को सीलैंड के राजकुमार के रूप में पेश करता है। माइकल बेट्स सफोल्क में रहते हैं, जहां वे और उनके बेटे फ्रूट्स ऑफ द सी नामक पारिवारिक मछली पकड़ने का व्यवसाय चलाते हैं।

मान्यता

द ऑस्ट्रेलियन और रेड बुल के साइमन सेलर्स सीलैंड को दुनिया का सबसे छोटा देश बताते हैं, लेकिन सीलैंड को किसी भी स्थापित संप्रभु राज्य द्वारा आधिकारिक रूप से मान्यता प्राप्त नहीं है। लेकिन फिर भी सीलैंड सरकार का दावा है कि इसे जर्मनी द्वारा वास्तविक रूप से मान्यता दी गई है, क्योंकि जर्मनी ने एक बार एक राजनयिक को सीलैंड भेजा था।

कानूनी दर्जा

1987 में संयुक्त साम्राज्य ने अपने क्षेत्रीय जल को 6 से 22 किमी बढ़ा दिया। सीलैंड अब ब्रिटिश प्रादेशिक जल में है। कानून के अकादमिक जॉन गिब्सन की राय में इस बात की कोई संभावना नहीं है कि मानव निर्मित संरचना होने के कारण सीलैंड को एक राष्ट्र के रूप में मान्यता दी जाएगी।

प्रशासन

2004 में संडरलैंड विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित एक सूक्ष्म राष्ट्र सम्मेलन में सीलैंड का प्रतिनिधित्व माइकल बेट्स के बेटे जेम्स ने किया था। इस सुविधा में अब माइकल बेट्स का प्रतिनिधित्व करने वाले एक या एक से अधिक कार्यवाहक हैं जो स्वयं एसेक्स, इंग्लैंड में रहते हैं।

सीलैंड ने "सबसे छोटे क्षेत्र को राष्ट्र का दर्जा देने का दावा करने" के लिए गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया है।

सीलैंड: समुद्री लुटेरों और हैकरों का स्वर्ग?

सीलैंड पर समुद्री डाकुओं और हैकरों का स्वर्ग होने का आरोप लगाया गया है। 2000 में, यह बताया गया कि सरकारी वेबसाइटों पर हमले शुरू करने के लिए हैकरों के एक समूह द्वारा सीलैंड का उपयोग किया जा रहा था। 2012 में, समुद्री डाकुओं के एक समूह ने कथित तौर पर शिपिंग जहाजों पर हमले शुरू करने के लिए सीलैंड को एक अड्डे के रूप में इस्तेमाल किया था।

सीलैंड की सरकार ने इन आरोपों से इनकार किया है, लेकिन आरोप कायम हैं। कुछ लोगों का मानना है कि सीलैंड का दूरस्थ स्थान और सरकारी नियमों की कमी इसे अपराधियों के लिए एक आकर्षक गंतव्य बनाती है।

सीलैंड का भविष्य अनिश्चित है। यह संभव है कि सीलैंड को अंततः एक संप्रभु राज्य के रूप में मान्यता दी जा सकती है, लेकिन यह भी संभव है कि इसे छोड़ दिया जा सकता है या नष्ट भी किया जा सकता है।

सीलैंड की सरकार पर्यटन को बढ़ावा देने और व्यवसायों को मंच पर आकर्षित करने के लिए काम कर रही है। हालाँकि, यह स्पष्ट नहीं है कि सीलैंड लंबे समय तक जीवित रह पाएगा या नहीं।

अंत में, सीलैंड एक अद्वितीय और आकर्षक माइक्रोनेशन है। यह एक अनुस्मारक है कि दुनिया में अभी भी ऐसी जगहें हैं जहां लोग अपना समाज बना सकते हैं। चाहे सीलैंड का भविष्य उज्ज्वल हो या धूमिल, यह निश्चित है कि आने वाले वर्षों में यह साज़िश और अटकलों का स्रोत बना रहेगा।

@@@@@

(स्रोत: इंडिया टुडे और विकिपीडिया)

श्री अमरनाथ गुप्ता

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम एवं बाबू वीर कुंवर सिंह

1857 का भारतीय विद्रोह ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के खिलाफ 1857-58 में भारत में एक बड़ा विद्रोह था वैसे तो भारत में 1857 के स्वांतरतना संग्राम मे बहुत से वीरों को सुनने और पढ़ने को मिलता है परंतु हमारे बिहार के भोजपुर जिले (हमारा गृह जिला) के बाबू वीर कुँवर सिंह की कम योगदान नही रहा है । इनको 80 वर्ष की उम्र में भी लड़ने तथा विजय हासिल करने के लिए जाना जाता है। आइये हम उनके बारे में संक्षिप्त में जानते है। कुँवर सिंह , जिन्हें बाबू कुँवर सिंह के नाम से भी जाना जाता है, इनका जन्म 23 अप्रैल 1777 को बिहार के जगदीशपुर, निकट आरा, जो वर्तमान में जिला भोजपुर के एक क्षत्रिय परिवार में हुआ था। इनके पिता राजा साहबजादा सिंह और माताजी का नाम पंचरत्न कुंवर था। उनके पिता, राजा साहिबजादा सिंह के निधन के बाद उन्हे 1826, में गद्दी पर बैठाया गया। उनके राज्य में शाहबाद जिले के दो परगना और अनेक तालुके सम्मिलित थे । भोजपुरी शेर बाबू वीर कुंवर सिंह के पिता बाबू साहबजादा सिंह उज्जैनिया क्षत्रियों के वंशज थे। कुंवर सिंह की माता का नाम पंचरत्न कुंवर था। जगदीशपुर गांव के लोग ऐसा बताते है कि कुंवर सिंह बचपन से ही वीर थे। बंदूक चलाने और घोड़ा दौड़ाने का नशा उनको बचपन से ही सवार था। वो छूरी-भाला और कटारी चलाने का भी अभ्यास करते रहते थे। बचपन से ही वे काफी मेघावी भी थे। बिहार के भोजपुर जिले क्षेत्र से 1857 के भारतीय विद्रोह के मुख्य आयोजक थे।

भारत के प्रथम स्वन्त्रता संग्राम 1857 के दौरान कुँवर सिंह ने ब्रिटिश सेना के खिलाफ सशत्र बलों के एक दल का नेतृत्व किया था। वृद्धावस्था के वावजूद, कुँवर सिंह का नाम ब्रिटिश सैन्य आधिकारियों के बीच भय उत्पन्न कर देता था । वह भारत के बिहार राज्य में जगदीशपुर रियासत के शासक थे।। अन्याय विरोधी व स्वतंत्रता प्रेमी बाबू कुंवर सिंह कुशल सेना नायक थे। 1857 की भारतीय क्रांति , 10 मई 1857 को मेरठ शहर में, ईस्ट इंडिया कंपनी की शक्ति के लिए गंभीर खतरे के रूप में उभरी और ब्रिटिश बलों तथा रजवाड़ो के नेतृत्व वाले बलों, विद्रोही भारतीय सैनिकों आदि के बीच कई स्थानों पर युद्ध लड़े गए । फौज में सैनिक विद्रोह से सुरू हुई और जल्द ही भारत के अनेक भागों में आग की भांति फैल गई। बिहार समेत कई स्थानों पर भीषण युद्ध हुआ। यह क्रांति कंपनी के में अंग्रेजों को भारत से भगाने के लिए हिंदू और मुसलमानों ने मिलकर कदम बढ़ाया। मंगल पांडे की बहादुरी ने सारे देश में विप्लव मचा दिया। बिहार की दानापुर रेजिमेंट, बंगाल के बैरकपुर और रामगढ़ के सिपाहियों ने बगावत कर दी। मेरठ, कानपुर, लखनऊ, इलाहाबाद, झांसी और दिल्ली में भी आग भड़क उठी। ऐसे हालात में बाबू कुंवर सिंह ने अपने सेनापति मैकु सिंह एवं भारतीय सैनिकों का नेतृत्व किया। जब अंग्रेजी फौज ने आरा पर हमला करने की कोशिश की तो बीबीगंज और बिहिया के जंगलों में घमासान लड़ाई हुई,27 अप्रैल 1857 को दानापुर के सिपाहियों, भोजपुरी जवानों और अन्य साथियों के साथ आरा नगर पर बाबू वीर कुंवर सिंह ने कब्जा जमा लिया था। अंग्रेजों की लाख कोशिशों के बाद भी भोजपुर लंबे समय तक स्वतंत्र था।

ब्रिटिश इतिहासकार होम्स ने बाबू वीर कुंवर सिंह बारे में लिखा है कि 'उस बूढ़े राजपूत ने ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध अद्भुत वीरता और आन-बान के साथ लड़ाई लड़ी। यह गनीमत थी कि युद्ध के समय कुंवर सिंह की उम्र 80 के करीब थी। अगर वो जवान होते तो शायद अंग्रेजों को 1857 में ही भारत छोड़ना पड़ जाता।' बहादुर स्वतंत्रता सेनानी जगदीशपुर की ओर बढ़ गए। पुनः 2 अगस्त 1857 को मेजर आयर से सेना की भिड़ंत आरा के बीबीगंज के निकट हो गई। इस युद्ध में बाबू कुंवर सिंह के पास सीमित सेना थी। सीमित सेना होने के बाद भी बाबू कुंवर युद्ध से पीछे नहीं भागे और युद्ध किया। लेकिन सीमित सेना होने के कारण इस युद्ध में शिकस्त मिली। कुंवर सिंह स्त्रियों और सैनिकों के साथ महल से निकल गए। जिसके बाद मेजर आयर का जगदीशपुर पर कब्जा हो गया।20 अप्रैल 1858 को आजमगढ़ पर कब्जे के बाद रात में कुंवर सिंह बलिया के मनियर गांव पहुंचे थे। 22 अप्रैल को सूर्योदय की बेला में शिवपुर घाट बलिया से एक नाव पर सवार हो गंगा पार करने लगे। इस दौरान अंग्रेजों की गोली उनके बांह में लग गई। तब उन्होंने यह कहते हुए कि 'लो गंगा माई! तेरी यही इच्छा है तो यही सही' खुद ही बाएं हाथ से तलवार उठाकर उस झूलती हाथ को काट गंगा में प्रवाहित कर दिया था। उस दिन बुरी तरह घायल हो गए थे । लेकिन कुंवर सिंह ने एक बार फिर हिम्मत जुटाई

और उन्होंने जगदीशपुर किले से यूनियन जैक का झंडा उतार कर ही दम लिया। हालांकि बाद में वे अपने हाथ के गहरे जख्म को सहन नहीं पाए और अगले ही दिन 26 अप्रैल 1858 को वे मातृभूमि की रक्षा करते हुए शहीद हो गए थे। इनके ही नाम पर बिहार के भोजपुर जिला के मुख्यालय आरा में वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय की स्थापना 22 अक्टूबर 1992 की गई। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में उनके योगदान के लिये 23 अप्रैल 1966 को भारत गणराज्य द्वारा उनके सम्मान में एक स्मारक डाक टिकट जारी किया गया।

आज भी भारत के इतिहास में उनका नाम अमर है। बिहार में उनकी जयंती प्रत्येक वर्ष २३ अप्रैल को बड़े ही धूम धाम से मनाया जाता है।

जय हिन्द जय भारत।

सुश्री पूजा साव

कनिष्ठ अनुवादक

हिंदी के प्रचार-प्रसार में विज्ञापन की भूमिका

जनसंचार के विभिन्न माध्यम आकाशवाणी, दूरदर्शन, फिल्म तथा समाचार पत्र आदि है। आजकल एक और सशक्त और सर्वसुलभ माध्यम जुड़ गया है और वह इंटरनेट है। तमाम तरह के वेबसाइट, पोर्टल, सोशल मीडिया आदि इंटरनेट पर सर्वसुलभ हैं। करोड़ों लोग इंटरनेट का उपयोग भी करते हैं। इंटरनेट अब लोगों की मूलभूत ज़रूरत बन गया है।

पर, माध्यम कोई भी हो, इन माध्यमों में विज्ञापन का विशेष स्थान है। विज्ञापन वर्तमान व्यापार की जीवन-संजीवनी माना जाता है। विज्ञापन शब्द अँग्रेजी के Advertisement का हिंदी रूपांतरण है। जो 'ज्ञापन' शब्द के साथ 'वि' उपसर्ग के योग से बना है। जिसका व्युत्पत्तीय अर्थ है- विशेष रूप से सूचित या ज्ञापन कराना। सामान्यत: विज्ञापन का संबंध व्यापार विशेष से जुड़ा हुआ है। आधुनिक अर्थ में विज्ञापन उस कला को कहते हैं जिससे उत्पादित वस्तुओं की अधिकाधिक जानकारी कराए, उनको खरीदने की लालसा बढ़ाए और वस्तु की चाह उत्पन्न कर माँग में वृध्दि करे। विज्ञापन लोगों को वस्तु के बारे में संक्षिप्त शब्दों में अधिक-से-अधिक जानकारी देता है तथा संबंधित उत्पादित वस्तु के बारे में उपभोक्ता के मन में विश्वसनीयता पैदा करने की पूरी कोशिश करता है। **डॉ. डबरन** की परिभाषा द्रष्टव्य है- "विज्ञापन के अंतर्गत वे सब क्रियाएँ आ जाती हैं जिनके अनुसार दृश्यमान अथवा मौखिक संदेश जनता को सूचना देने के उद्देश्य से तथा उन्हें या तो किसी वस्तु को क्रय करने के लिए अथवा पूर्व निश्चित विचारों, संस्थाओं, व्यक्तियों के प्रति झुक जाने के उद्देश्य से संबोधित किये जाते हैं। अत: संक्षेप में कहा जा सकता है- **विज्ञापन जनसम्पर्क का एकमात्र ऐसा शक्तिशाली साधन है जिसके माध्यम से उत्पादित-वस्तु के बारे में प्रभावी सूचना द्वारा उपभोक्ता के मन में विश्वास पैदा कर उसके क्रय हेतु उन्हें व्यापक पैमाने पर प्रेरित किया जाता है।** बाजार एवं अर्थ-व्यवस्था की अलग-अलग स्थिति एवं संदर्भ के अनुसार विज्ञापन का स्वरूप भी बदलता है। विज्ञापन के कई

भेद हो सकते है; जैसे- लिखित या मुद्रित, मौखिक, श्रव्य, दृक्श्रव्य आदि। विज्ञापन के अन्य माध्यमों की अपेक्षा जन-संचार माध्यमों द्वारा प्रस्तुत विज्ञापन अधिक प्रभावी तथा सफल पाए जाते है।

हिंदी में विज्ञापन की समस्याएँ

विज्ञापन कोई भी हो, कैसा भी हो, उसे आम जन-मानस तक पहुँचने के लिए एक भाषा की आवश्यकता होती है। स्वतंत्रता के बाद हिंदी राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठापित हुई जिसके फलस्वरूप कामकाज तथा जनसंचार के लिए प्रयोजनमूलक हिंदी को अपनाया गया। आजादी के बाद सभी भारतीय भाषाओं के भीतर अस्मिता तथा गौरव का भाव जाग्रत हुआ। यधपि अभी भी अँग्रेजी का वर्चस्व हमारी मानसिकता पर कम नहीं हुआ है। दक्षिण भारत हमेशा से राष्ट्रभाषा हिंदी के प्रति विरोध करता आया है। यधपि प्रादेशिक स्तर पर विविध प्रादेशिक भाषाओं में विज्ञापन दिए जाते हैं, परंतु अंतर-प्रादेशिक स्तरीय विज्ञापन-माध्यमों में अँग्रेजी तथा हिंदी का प्रयोग ही बड़े पैमाने पर किया जाता है। आज भी सरकारी तथा अर्ध-सरकारी कार्यालयों में संपर्क-भाषा के रूप में अँग्रेजी का प्रयोग होता है, परंतु जन-संपर्क-भाषा के रूप में सामान्य जनता हिंदी का प्रयोग ही करती है। किंतु हिंदी में विज्ञापन करने में अभी भी विभिन्न कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

1. **मौलिक हिंदी विज्ञापनों का अभाव**:- हिंदी में प्राय: मौलिक विज्ञापन लेखन के बजाय अँग्रेजी विज्ञापन के अनुवाद का कार्य अधिक होता है। मूल विज्ञापन अँग्रेजी भाषा और उसके साथ जुड़ी अँग्रेजी-मनोभूमि के परिप्रेक्ष्य में बनाए जाते हैं। उन विज्ञापनों का हिंदी में उल्टे कई विसंगतियों को पैदा करता है। इसलिए कभी-कभी कुछ विज्ञापन उद्दीपन-सुख देते हैं, परंतु समझ में कुछ नहीं आता। उदाहरण- दूरदर्शन के लिए बार-बार आनेवाला 'ओनिडा' टी.वी का विज्ञापन। विज्ञापन की सफलता सर्वाधिक मात्रा में जनमानस की पहचान और उसके अनुरूप भाषा प्रयोग में होती है। पाश्चात्य समाज और भारतीय समाज की मानसिकता में पर्याप्त अंतर होता है- यह अंतर न तो अँग्रेज समझ सकते हैं और न ही अँग्रेजी-दाँ लोग। अत: भारतीय जन-मानस के अनुरूप मौलिक विज्ञापनों के निर्माण की दिशा में प्रयास होने चाहिए ।

2. **विज्ञापन लेखकों के प्रति उपेक्षात्मक दृष्टिकोण**:- हमारे यहाँ व्यावसायिक लेखन करनेवाले को उपेक्षात्मक दृष्टिकोण से देखा जाता है। इसलिए प्रतिभाशाली लेखक इससे दूर ही रहते हैं। विज्ञापन-तंत्र तथा भाषा में समान गति पाने वाले आलेखकों का अभाव पाया जाता है। अत: विज्ञापन की सफलता बहुत कुछ आलेखक पर निर्भर होती है।

3. **अपरिवर्तनीय विज्ञापन-शब्दावली का अभाव**:- अँग्रेजी में विज्ञापन का अध्ययन तथा निर्माण का कार्य लंबे समय से चल रहा है। इसलिए उसके पास विभिन्न क्षेत्रों की ज्ञान-विज्ञान की शब्दावली का तैयार भंडार है। उसे शब्द के लिए यहाँ-वहाँ भटकना नहीं पड़ता। जबकि हिंदी के पास विज्ञापन लेखन की लंबी परंपरा नहीं है। ज्ञान-विज्ञान की जो पारिभाषिक शब्दावली उसके पास हैं, वह मात्र परिभाषिक कोषों में बंद है। उसका व्यवहार उस मात्रा में नहीं होता कि जन-मानस में उसका प्रचलन हो। इस दिशा में अब कार्य हो रहा है। हिंदी अभी इन विषयों को अँग्रेजी शब्दावली के पर्याय तथा इन विषयों की जानकारी को जुटाने की प्रक्रिया में हैं।

4. **संपर्क भाषा की भिन्नरूपता**:- हिंदी तथा हिंदीतर प्रदेशों में संपर्क भाषा हिंदी के विभिन्न रूप व्यवहृत हैं। हिंदी प्रदेशों में भी व्यावहारिक हिंदी में एकरूपता नहीं हैं। आम जनता अपने क्षेत्र की बोली का प्रयोग करती है। सरकारी तौर पर भी इस दिशा में सार्थक प्रयास नहीं हुए ताकि कम-से-कम हिंदी प्रदेशों में संपर्क भाषा के रूप में एक समान शब्दावली का निर्माण हो। संपर्क भाषा के रूप में हिंदीतर क्षेत्रों में कई रूप पाए जाते हैं। पंजाबी, नागपुरी, मराठी, कन्नड़, कश्मीरी, तमिल, तेलुगु, मलयालम, बंगाली आदि के शब्द, उच्चारण-व्याकरण आदि का प्रभाव इस पर देखा जा सकता है। बहुभाषिक महानगरों में इन प्रादेशिक भाषाओं के साथ अँग्रेजी का भी पर्याप्त प्रभाव देखा जा सकता है। ऐसी स्थिति में विज्ञापन के लिए किस रूप को अपनाएँ, यह बड़ी समस्या बन जाती है और पूरी तरह मानक भाषा को अपनाना विज्ञापन में संभव नहीं है।

5. **लिपि-समस्या**:- विज्ञापन में लिखित भाषा के रूप में प्रयुक्त करते समय लिपि समस्या का सामना करना पड़ता है। हिंदीतर प्रदेशों में हिंदी बोली-समझी जाती है। दक्षिण के कुछ राज्यों को छोड़कर हिंदी की देवनागरी लिपि हर कोई जानता है। यद्यपि आर्य भाषाओं की लिपि में बहुत साम्य है, इस क्षेत्र के लोग हिंदी जानते है, परंतु देवनागरी सीखने में आसानी नहीं महसूस करते हैं। इसलिए कई बार हिंदी-विज्ञापनों में भी देवनागरी लिपि की जगह रोमन लिपि का प्रयोग किया जाता है। दूसरी समस्या हिंदी वर्तनी की भी है। संयुक्त अक्षर, पूर्ण-विराम, एक से अधिक ध्वनि-चिन्ह आदि की समस्याएँ लिखित भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग करते समय सामने आती है।

समाधान

1. **यूनिकोड** - आजकल सभी मोबाइल फोन, लैपटॉप और कंप्यूटर यूनिकोड समर्थित आ रहे हैं जिससे देवनागरी में लिखने-पढ़ने की समस्या का काफी हद तक समाधान हुआ है। बस, अब मानसिकता की समस्या रह गई है जो बिना जागरूकता और गर्वानुभूति के नहीं जा सकती।

कई उपयोक्ता रोमन लिपि में ह्वाट्सअप चैट करते हैं यह जानते हुए भी कि उनके मोबाइल और लैपटॉप में हिंदी कीबोर्ड उपलब्ध है जिसे चलाने के लिए किसी अतिरिक्त श्रम की कोई ज़रूरत नहीं है ।

2. **फोनेटिक्स** - सूचना-प्रौद्योगिकी के आधुनिक गजटों में बोलकर लिखने की सुविधा भी उपलब्ध हो गई है जिसका उपयोग कर हिंदी में रचनात्मक लेखन किया जा सकता है जो विज्ञापन-लेखन में भी सहायक सिद्ध होगा ।

3. **मनोरंजन-उद्योग** - हमारे देश का मनोरंजन-उद्योग भी हिंदी में विज्ञापनों को लोकप्रिय बनाने की दिशा में काफी योगदान दे सकता है। खुशी की बात है कि अपनी इस जिम्मेवारी को मनोरंजन-उद्योग अब भली-भाँति समझने लगा है। कुछ प्रसिद्ध विज्ञापनों को देखिए - "ये दिल माँगे मोर", "ठंढ़ा मतलब कोका कोला", "लाइफब्वाय है जहाँ तंदुरुस्ती है वहाँ" आदि । इन विज्ञापनों की सफलता के आगे तो अँग्रेजी के विज्ञापन भी टिक नहीं पाते ।

4. **सरकारी प्रोत्साहन** - हिंदी में विज्ञापन के लिए सरकार की तरफ से भी प्रोत्साहन की योजनाएँ चलानी चाहिए जिससे अधिक से अधिक लोग हिंदी-विज्ञापनों की ओर उन्मुख हों ।

5. **सरलीकरण और मानकीकरण** - हिंदी में विज्ञापनों की भाषा को क्लिष्टता से बचना चाहिए। भाषा जितनी सरल एवं सुग्राह्य होगी, आम जन-मानस तक उसकी पहुँच उतनी ही गहरी होगी ।

6. **गर्वानुभूति** - हिंदी हमारे देश की राजभाषा है। इतना ही नहीं, हिंदी एकमात्र ऐसी भाषा है जिसे देश के प्रत्येक हिस्से में समझा जाता है। सदियों की गुलामी ने हमारे देश की मानसिकता को इस कदर गुलाम बना दिया है कि उससे निकलना अभी भी बाकी है। हिंदी कोई कमजोर या हेय भाषा नहीं है। हिंदी में विज्ञापन कर हमें गर्वान्वित होना चाहिए। ऐसा तभी हो सकता है जब हमारी मानसिकता बदले और हम अपनी राजभाषा से प्रेम करने लगें ।

श्री अरुण कुमार साव

कनिष्ठ अनुवादक, उप-कार्यालय, देहरादून

वो पुराने दिन

पुरानी स्मृतियां जीवन की एक अनमोल रत्न हैं। ये स्मृतियां हमें अतीत की यात्रा कराती हैं। हम अपने जीवन में घटित पुरानी स्मृतियों को याद कर उन सुख-दुख के रंगों से भरी भावनाओं का अनुभव करते है। समय कितना गतिशील और परिवर्तनशील है ना! यह नदी की धारा की भांति ही निरंतर गतिशील है। वक्त का कांटा निरंतर चलता ही रहता है। इस परिवर्तनशील जीवन में हम कब एक छोटे से बच्चे से बड़े हो जाते है, वक्त का पता ही नहीं चलता। बस रह जाती है तो बस वो पुराने दिन। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में जो भी कुछ उसके अतीत में होता है उसकी स्मृति की व्याख्यान केवल वही व्यक्ति कर सकता है। उन पुराने दिनों को याद करके ऐसा लगता है कि बस उन यादों में खोया रहूँ। क्योंकि वो दिन तो अब कभी लौट कर नहीं आने वाला है। लेकिन उन दिनों के यादों की एक झांकी से मन प्रफुल्लित हो उठता है। आनंद का ऐसा स्वरूप जिसे हम केवल अनुभव ही कर सकते है, पहुँच नहीं सकते है। वहाँ पहुँच सकता है तो केवल हमारा मन और कुछ भी नहीं। हमारा मन जीवन के अतीत की खुशी, उदासी, प्यार, बचपन की यादें, रिश्ते, दोस्ती सभी को संग्रहित करके रखता है और हम इन्हें याद कर हर्षित होते है।

दोस्तों के साथ स्कूल से घर आकर वो अप्रैल-मई की कड़ी धूप में क्रिकेट खेलने जाना, दोस्तों और परिवारजनों के साथ बचपन में हर एक त्योहार में घूमना - फिरना मौज मस्ती करना,

दादा-दादी के साथ बैठ उनसे कहानियाँ सुनना, मम्मी की छोटी सी बैग से 50 पैसे के सिक्के चुराना और उन सिक्कों से गोली मिठाई खाना। इन दिनों को याद कर पुरानी यादें ताज़ा हो जाती है। पुराने दिनों का पिटारा खोलते ही, बीते हुये दिनों की तस्वीरें आँखों के सामने घूमने लगती है। इन दिनों की यादों में खोकर हमारे अन्दर एक तीव्र इच्छा प्रकट होती है कि हम फिर से अपने अतीत में चले जाये और उन दिनों को पुनः खुल कर जिये। अपने भाई-बहन के साथ बिताए बचपन के वो पल बहुत ही अनमोल थे। दीदी से छोटी-छोटी बात पर लड़ाई करना और फिर दीदी से ही खाना परोसने के लिए कहना। शब्दों में पिरोना तो अत्यंत ही मुश्किल है।

यह वक्त तो निरंतर बदलते ही रहता है लेकिन अपने पीछे छोड़ जाता है वह पुराने दिन, वह स्मृतियां, वह यादें जिसे हम सभी याद करके अपने अतीत की ओर लौट जाते हैं और उन दिनों को याद करने लगते हैं जो अब नहीं आने वाला। जब हम अपने बचपन के दिनों को याद करते है तो हमारे मन में एक अलग प्रकार की खुशी की अनुभूति होती है। ये खुशी बहुत ही मधुर होती है। बचपन की स्मृतियों को याद कर एक पल के लिए ऐसा प्रतीत होता है कि उन पलों को फिर से जिया जाय। जहाँ न कोई तनाव और न ही कोई जिम्मेदारी थी। बस अपने ही धुन में खोया मस्त मगन होकर बेफिक्र होकर जीवन के आनंद लेता था। जहाँ समय की कोई पाबंदी नहीं थी। स्कूल हो या घर या हो खेल का मैदान यही हमारी विशाल दुनिया हुआ करती थी। दोस्तों से लड़ाई भी होती थी और उसी क्षण दोस्ती भी। हम साथ लड़ते और साथ ही एक दूसरे के कंधे मे हाथ डाल कर घूमते।

समय, जीवन का एक अनमोल रत्न है। यह क्षणभंगुर है, एक बार चला जाए तो फिर कभी वापस नहीं आता। समय का सदुपयोग ही सफलता की कुंजी है। अर्थात जो आज है वह कल अतीत बन जाएगा फिर वह पल दोबारा लौट कर नहीं आने वाला। नदियों में ज्वार-भाँटा की भांति ही जीवन में भी ज्वार-भाँटा आते ही रहते हैं किंतु हमें उस स्थिति से विचलित होने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। हमें अपने जीवन में आने वाले उतार चढ़ाव को देखकर घबराना नहीं चाहिए।

नदी की धारा की भाँति, हमें भी अपने लक्ष्यों की ओर सतत प्रयासरत रहना चाहिए। हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि पुरानी यादें जीवन की अनमोल रत्न है, जो हमारे अतीत के क्षणों की यादों को संभाल कर रखता है। हालांकि यह भी सत्य है कि हमें ज्यादा अतीत में भी नहीं खोये रहना चाहिए। लेकिन पुरानी यादों के महत्व को नकारा भी नहीं जा सकता। वे हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है। हमारी पुरानी यादें हमें जिंदगी का सार समझने में मदद करती है।

ईश्वर का भी फैसला बहुत ही नेक है, मृत्यु उपरांत क्या अमीर क्या गरीब सभी का बिस्तर एक है। क्या अमीर क्या गरीब सभी को इस क्षणभंगुर संसार में अपना सब कुछ छोड़कर ही जाना है। इसीलिए अपनी जिंदगी को खुल के जीने की आवश्यकता है न की गुजारने की।

श्री शरद धनगर

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

प्रकृति मेरी शिक्षक है

प्रकृति यानि सृष्टि पृथ्वी,जल, अग्नि, वायु और आकाश यह पंच तत्वों से बनी रचना है। प्रकृति और मनुष्य का संबंध उसके जन्म से ही है। प्रकृति हमारे अनेक शिक्षकों में से एक है। गुरु हमें अंधकार से प्रकाश देता है, जो हमें बनाता है, हमें ज्ञान देता है, हम उसे अपना गुरु मानते हैं। प्रकृति भी उनमें से एक है। क्योंकि प्रकृति भी हमें विभिन्न प्रकार का ज्ञान सिखाती है, बनाती है और देती है। प्रकृति हमें अपने कार्यों से बहुत कुछ सिखाती है। इसके लिए हमें उनके साथ एकजुट होना होगा। जब मैं प्रकृति के साथ एकरूप हो गया। तब से मुझे प्रकृति के अनेक रूपों, तत्वों, आकृतियों और आकारों का अनुभव हुआ। प्रकृति का प्रत्येक तत्व अपनी क्रियाओं द्वारा कुछ न कुछ सिखा रहा है। इसे समझने की कला हमारे पास होनी चाहिए।

कुछ उदाहरणों पर गौर करें तो आपको सच्चाई समझ में आ जाएगी। शोर मचाते हुए बहती हुई नदी का प्रवाह अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए अंतः सागर तक पहुँचता है। इससे नदी कहती है कि, काम करते रहो, विपरीत परिस्थितियों का सामना करो, लेकिन सफल बनो। पेड़ कभी नहीं बोलते लेकिन बहुत कुछ कहते हैं। निरंतर दान करें, छोटे-बड़े का भेदभाव न करें। दिल से जवान रहें। इस प्रकार यदि आप पत्तों, फूलों, पशु-पक्षियों, कीड़े-मकौड़ों/चींटियों, पहाड़ों-घाटियों, नदियों और झरनों को देखेंगे तो आप उनसे कुछ न कुछ अवश्य सीखेंगे।

इमरान खाटीक

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हां वो मेरी मां है

हां वो मेरी मां है, पर अब उसमें ममता नही।
मैं बेटा हूं उसका, पर उसे इस बात का एहसास नहीं।

साथ तो वो है मेरे बरसों से, पर अब मेरे सुख-दुःख की उसे परवाह नहीं।
मेरे घाव, दर्द, तकलीफ़ अब उसे रुलाते नहीं।

शायद ही कभी मेरे गिर जाने पर बेटा कहकर पुकारा होगा उसने,
अब कलेजा कट जाने पर भी उसके चेहरे के बदलते कोई भाव नहीं।

एक बेजान-सी मूरत की तरह वो नजर आती है,
मुझको गले लगाने की उसमें अब कोई चाह नहीं।

कितनी शिकायत करेगा इमरान अपनी तकदीर से,
मस्तिष्क का विकार ही ऐसा है जो जल्दी ठीक होने वाला नहीं।

आज भी रिश्तेदारों के वो चेहरे, वो ताने याद है मुझे मां ।
किस तरह तुम चुप रहकर सब सहती थी, अंदर ही अंदर घुटती रहती थी।
मेरे तन-मन में आग-सी लग जाती थी।

अब उनके मुंह से निकलते नहीं अल्फाज भी मां ।
आज मैं उनसे कहना चाहता हूं "हां तू मेरी मां है।"

मैं भूला नहीं हूं कुछ भी, फटी हुई किताबें, टूटी हुई चप्पल, बैग के नाम पर एक बोरी और एहसान जताते हुए लोग।

याद है मुझे एक-एक कोरे पन्ने को जोड़कर रातों में नोटबुक बनाई है।
चंद पैसे बचाने के खातिर टीचर से डांट खाई है।

अरमान तो बस इतना ही था उस वक्त दिल में, तेरे कुछ काम आ पाऊं मां,
तेरा नाम ऊंचा कर पाऊं मां, भले ही उसके बाद मैं मर जाऊं मां।

मुकद्दर से मोहब्बत किसी की मिले ना मिले, तेरी ममता का आंचल पाकर धन्य हो जाऊ मां।

जन्म दिया है तूने मुझे, एक दिन का मैं कैसे “मदर डे” मनाऊं मां।
बिन धरा के पेड़ कहां जीवित रहते हैं लोगों को कैसे समझाऊं मां।

पूछता हैं जब कोई पहचान मेरी? बस मैं लेता हूं नाम तेरा।
सबसे और गर्व से यही कहता हूं "हां वो मेरी मां है।"

श्री रवि कुमार
लेखापरीक्षक

मां के बिना.....

एक स्त्री अपने जीवन में पत्नी, बेटी, बहू जैसे ना जाने कितने रिश्ते निभाती है, लेकिन इन सभी रिश्तों में से जिस रिश्ते को सबसे ज्यादा सम्मान प्राप्त है वह माँ का रिश्ता है। मातृत्व वह बंधन है जिसकी व्याख्या शब्दों में नही की जा सकती है। माँ अपने बच्चे को जन्म देने के साथ ही उसके लालन-पालन का भी कार्य करती है। कुछ भी हो जाये लेकिन एक माँ का उसके बच्चों के प्रति स्नेह कभी कम नही होता है, वह खुद से भी ज्यादा अपने बच्चों के सुख-सुविधाओं को लेकर चिंतित रहती है।

एक बच्चे के लिए उसकी माँ ही सर्वप्रथम टीचर होती है जो अपनी ममता में उस बच्चे को सींचती है एवं उसे एक अच्छे आचरण के साथ अच्छे संस्कार भी प्रदान करती है। वहीं जब किसी बच्चे के पास माँ नहीं होती है तब हम और आप सोच भी नहीं सकते है कि उस मासूम बच्चे की जिंदगी कैसे शुरू होगी, साथ ही उसे किस राह पर चलना है, कुछ भी पता नहीं होगा । इस प्रकार उसकी प्रथम पाठशाला बिन माँ की अधूरी रह जाती है।

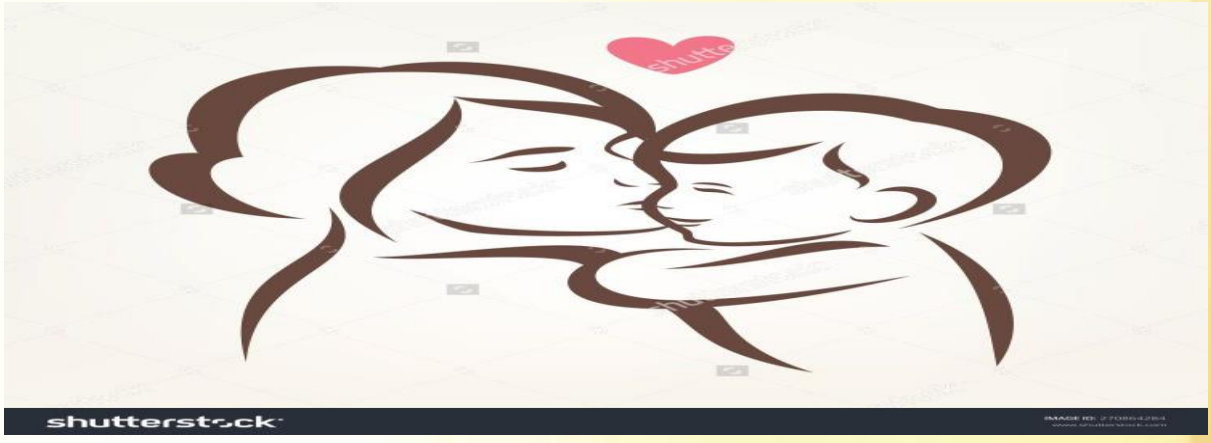

रोता नहीं सिसकता हूँ मैं
माँ के बिना तरसता हूँ मैं,

माँ से बड़ा न दूजा कोई
इससे बड़ा न पूजा कोई,

जब माँ ना हो तो जिंदगी जीने के मायने ही बदल जाते है। ना समय पर खाना, ना पानी, ना कोई देखभाल करने वाला, ना कोई पूछने वाला..... बस किसी प्रकार लड़ते-झगड़ते बड़े होते जाते है और जब किसी बच्चे को उसकी माँ के साथ घूमते -फिरते देख खुद को असहय महसूस करता बच्चा कभी रोता है, तो कभी सिसकता है और अंत में अपने पिता से जाकर लिपट जाता है।

मै अपने माँ को एक अभिभावक तथा टीचर के साथ ही अपना सबसे अच्छा दोस्त भी मानता हूँ क्योंकि चाहे कुछ भी हो जाये, उसका प्यार और दुलार मेरे प्रति कभी कम नहीं होता हैं। जब भी मैं किसी समस्या या फिर तकलीफ में होता हूँ तो मेरे कुछ कहे बिना ही वो जान जाती है और मेरी मदद करने को हर संभव कोशिश करती है। आज मैं अपने जीवन में जो कुछ भी हूं वह सिर्फ अपने माँ के ही बदौलत हूं क्योंकि मेरी सफलता तथा असफलता दोनो ही वक्त वह मेरे साथ थी। उनके बिना तो मैं अपने जीवन की कल्पना भी नही कर सकता। इन्हीं कारणों से तो माँ को पृथ्वी पर ईश्वर का रूप माना गया है और इसलिए यह कहावत भी काफी प्रचलित है कि "ईश्वर हर जगह मौजूद नही रह सकता है इसलिए उसने माँ को बनाया है।"

लेकिन आज जब वो मेरे साथ नहीं है तो ऐसा लगता है कि मानों खुशियाँ रूठ सी गई। उसके (माँ) के बिना ना कोई त्योहार अच्छा लगता है और ना ही कोई खुशियाँ अच्छी लगती है। उसके ना होने से जिंदगी थम सी गई। कभी-कभी माँ के बारे में सोच कर इतना रोना आता है कि पूछो मत। फिर खुद पर काबू करता हूँ, संभालता हूँ और सोचता हूँ कि मेरे जैसे लाखों लोगों के पास माँ ना होना कितना दुःखद होता होगा। दुनिया में कई ऐसे लोग भी है जिसके पास माँ तो है पर उसको उसकी कदर नहीं है और जब वही माँ उससे हमेशा के लिए दूर हो जाती है तब उसको एहसास होता है कि उसने अपनी जिंदगी की सबसे अनमोल इंसान को जो उससे निःस्वार्थ प्यार करती थी। अब वो उसके पास नहीं है। मेरे नजर में वो सबसे बदनसीब इंसान है जो समय रहते अपने माँ -बाप को प्यार, समय, इज़्ज़त और सम्मान ना दे सका।

जिस इंसान के पास माँ साया है, वो दुनिया में सबसे अमीर व्यक्ति है। इसलिए अपने माँ का अच्छे से ख्याल रखें, उनके साथ समय बिताये और जीतना हो सके उतना प्यार दें, क्योंकि जिंदगी का कोई भरोसा नहीं, आज जो आपके साथ है कल कहाँ होगा, कोई नहीं जनता हैं। माँ -बाप का साया जिंदगी में होना उतना ही जरुरी है जितना जिंदा रहने के लिए हवा और पानी।

श्री सचिन चौहान

लेखापरीक्षक

भारत में घरेलू पर्यटन

पर्यटन एक महत्वपूर्ण सामाजिक आर्थिक गतिविधि है। यह दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे तेजी से बढ़ता उद्योग है। भारत में पर्यटन में उच्च लाभ कमाने वाले उद्योग के रुप में विकसित होने की अपार संभावनाए है। भारत एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल है और घरेलू व अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करने में सफल रहा है।

भारत में मंदिरो, ऐतिहासिक स्मारकों और समुद्री तटों को पारंपरिक रुप से पर्यटकों के आकर्षण के रुप में देखा जाता था। परंतु हिल स्टेशन, ऐतिहासिक स्थल, वास्तुकला और स्मारक, समुद्र तट और धार्मिक स्थल भी भारत को दुनिया भर के पर्यटकों के लिए एक पसंदीदा स्थान बनाते है

भारत में पर्यटन की जड़ तीर्थ यात्रा में पाई जा सकती है। प्रारंभिक दौर में तीर्थ आधारित पर्यटन केवल घरेलू प्रकृति था लेकिन हाल के वर्षों में बड़ी संख्या में विदेशी पर्यटकों ने भी तीर्थ स्थलों का दौरा करना शुरु किया है। विश्व यात्रा और पर्यटन परिषद् ने आने वाले दशक में भारत को दुनिया के अग्रणी विकास केद्रों में से एक के रुप में पहचाना है। घरेलू पर्यटन अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन की तुलना में काफी अधिक होने का अनुमान है और यह तेजी से भी बढ़ रहा है। परिवहन और संचार की बेहतर कनेक्टिविटी, बेहतर जीवन स्तर और विदेशी पर्यटको के कारण घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों में वृद्धि हुई है ।

भारत सरकार पर्यटन के विभिन्न रुपों जैसे- ग्रामीण पर्यटन, आध्यात्मिक पर्यटन और साहसिक पर्यटन आदि को बढ़ावा देने में गहरी दिलचस्पी ले रही है। चिकित्सा पर्यटन ने स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण पर्यटन का गठन किया है। पश्चिमी राष्ट्र जैसे अमेरिका, इंग्लैड, कनाडा आदि और पड़ोसी देशों के अधिकांश विदेशी सस्ती विश्व स्तरीय स्वास्थ्य सेवाओं और उपचार के लिए भारत की ओर रुख कर रहे है।

भारत सरकार का इनक्रेडिबल भारत अभियान घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय बाजारो में भारत को एक समग्र पर्यटन स्थल के रुप में बढ़ावा देने में सहायक है। इसके तहत हेरिटेज होटलों की अवधारणा ने भारत में लोकप्रियता हासिल की है, क्योंकि पर्यटकों को विदेशी जीवन शैली का अनुभव मिलता है। प्राचीन काल में बनी कई ऐतिहासिक हवेलियों, महलों, किलो को हेरिटेज होटलों में तबदील कर दिया गया है, जैसा कि अपेक्षित था। वे प्रमुख पर्यटक आकर्षण बन गए है।

पर्यटन उद्योग देश के सकल घरेलू उत्पाद में प्रमुख योगदानकर्ताओं में से एक बन गया है। इसमें बड़े पैमाने पर रोजगार पैदा करने और आय के स्तर को बढ़ाने की क्षमता है, जिससे देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान होता है।

पर्यटन ने भारत की कला और संस्कृति के पुनरुद्धार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विदेशी भारत की समृद्ध संस्कृति और विरासत से मोहित है। भारत की संस्कृति और विरासत में पर्यटकों की गहरी दिलचस्पी को देखते हुए सरकार इसे संरक्षित करने के कदम उठा रही है। पर्यटक हमारे देश का सबसे बड़ा सेवा उद्योग है और इसमें देश के आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने की क्षमता है। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पर्यटन के बुनियादी ढांचे को विकसित करना आवश्यक है अर्थात् पर्यटन स्थलों, रेलवे स्टेशनों, हवाई अड्डो और विश्राम गृहों का उचित रखरखाव बहुत आवश्यक है। इसके अलावा पर्यटकों के लिए आवास, मनोरंजन, परिवहन और नए पर्यटन स्थलों के विकास के मामले में अधिक से अधिक कुशल सुविधाएं समय की मांग है।

कार्यालय में आयोजित हिंदी कार्यशाला

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा तथा
हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड
द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित खेल दिवस

SPORTS

ANNUAL
SPORTS

आपके पत्र

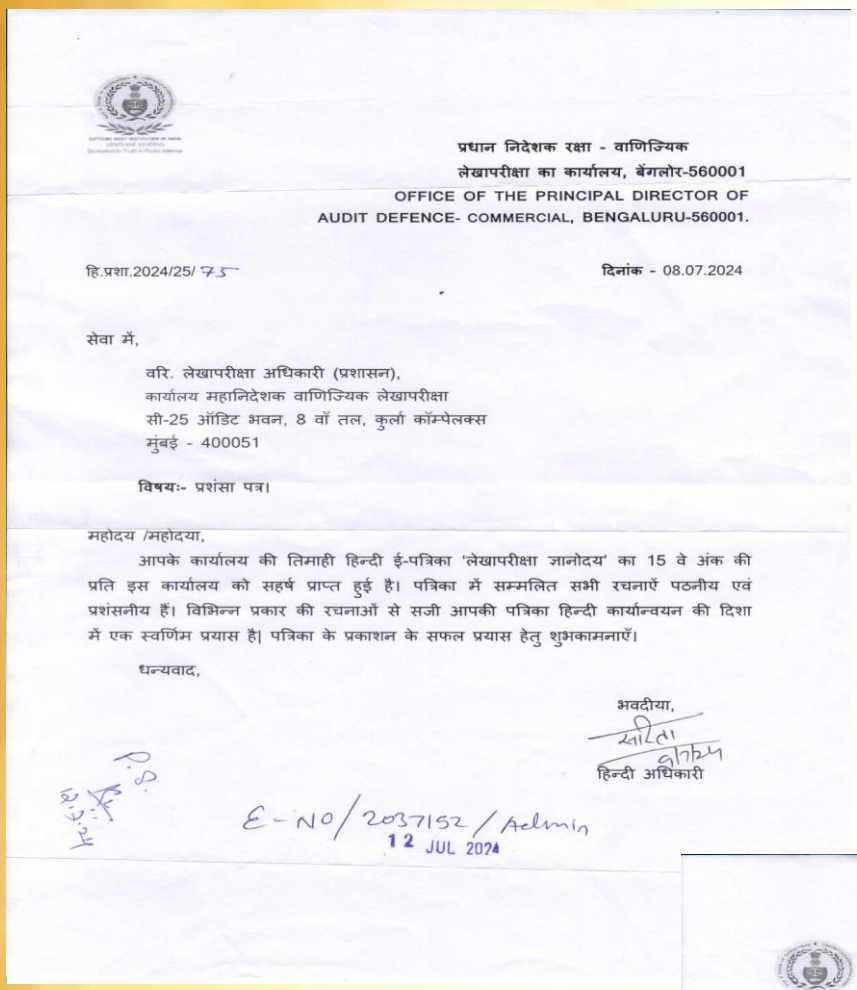

प्रधान निदेशक रक्षा - वाणिज्यिक
लेखापरीक्षा का कार्यालय, बेंगलोर-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF
AUDIT DEFENCE- COMMERCIAL, BENGALURU-560001.

हि.प्रशा.2024/25/ 75 दिनांक - 08.07.2024

सेवा में,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
सी-25 ऑडिट भवन, 8 वाँ तल, कुर्ला कॉम्पेलक्स
मुंबई - 400051

विषयः- प्रशंसा पत्र।

महोदय /महोदया,

आपके कार्यालय की तिमाही हिन्दी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' का 15 वे अंक की प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाऐं पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है| पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

भवदीया,
सीता
हिन्दी अधिकारी

E-NO/2037152/Admin
12 JUL 2024

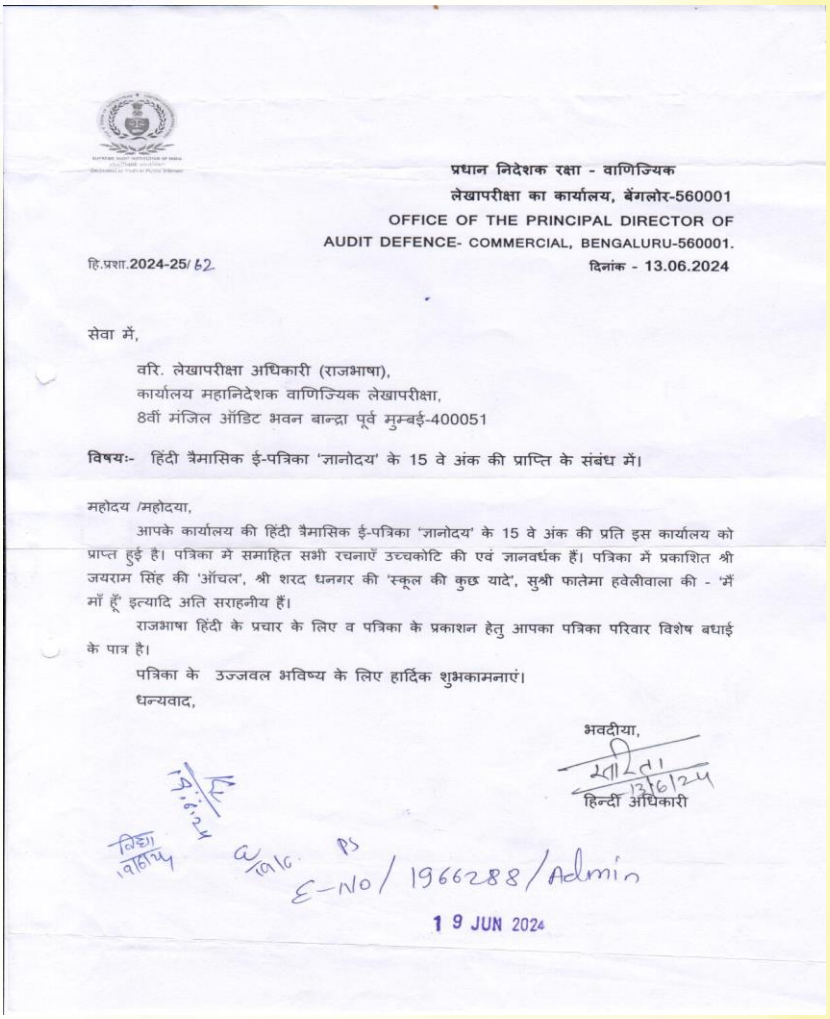

प्रधान निदेशक रक्षा - वाणिज्यिक
लेखापरीक्षा का कार्यालय, बेंगलोर-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF
AUDIT DEFENCE- COMMERCIAL, BENGALURU-560001.

हि.प्रशा.2024-25/ 62 दिनांक - 13.06.2024

सेवा में,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा),
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
8वीं मंजिल ऑडिट भवन बान्द्रा पूर्व मुम्बई-400051

विषयः- हिंदी त्रैमासिक ई-पत्रिका 'ज्ञानोदय' के 15 वे अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय /महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी त्रैमासिक ई-पत्रिका 'ज्ञानोदय' के 15 वे अंक की प्रति इस कार्यालय को प्राप्त हुई है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाऐं उच्चकोटि की एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में प्रकाशित श्री जयराम सिंह की 'ऑचल', श्री शरद धनगर की 'स्कूल की कुछ यादे', सुश्री फातेमा हवेलीवाला की - 'मैं माँ हूँ' इत्यादि अति सराहनीय हैं।

राजभाषा हिंदी के प्रचार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार विशेष बधाई के पात्र है।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

धन्यवाद,

भवदीया,
सीता
13/6/24
हिन्दी अधिकारी

E-NO/1966288/Admin
19 JUN 2024

Email **Admin Section PDCA Mumbai**

कार्यालय की तिमाही हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वें संस्करण की प्राप्ति के संबंध में ।

From : MOUSUMI CHOUDHARY <mousumic.asm.au@cag.gov.in> Wed, Jun 05, 2024 12:12 PM
Subject : कार्यालय की तिमाही हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वें संस्करण की प्राप्ति के संबंध में ।
To : Admin Section PDCA Mumbai <admin.mum.pdca@cag.gov.in>
Cc : Deepak Joshi <deepakj.mh3.au@cag.gov.in>

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन,
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
मुंबई

विषय: कार्यालय की तिमाही हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वें संस्करण की प्राप्ति के संबंध में ।

E-NO/1934065/Admin
06 JUN 2024

महोदय/महोदया,

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,मुंबई द्वारा प्रकाशित तिमाही हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट रचनाएँ सराहनीय हैं । पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी अत्यंत मनोहर है। राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार विशेष बधाई का पात्र है।

"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाओं सहित ।

भवदीया,
मौसमी चौधरी,
हिन्दी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), असम

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा-II), पश्चिम बंगाल
Office of the Pr. Accountant General
(Audit–II), West Bengal

संख्या :- हिंदी कक्ष/पत्रिका पावती/38 दिनांक:-21/05/2024
21 MAY 2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई,
सी - 25, ऑडिट भवन, 8 वाँ तल,
बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स - 400051

To,
The Sr. Audit Officer (Admn.),
O/o Director General of Commercial Audit, Mumbai,
C-25, Audit Bhawan, 8th Floor,
Bandra-Kurla Complex, Mumbai-400051

विषय: तिमाही हिन्दी ई - पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के **15**वें संस्करण के प्रतिभाव प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित **तिमाही हिन्दी ई - पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वें संस्करण** की प्राप्ति हुई। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ-ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षक है। कविताएं एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। इनमें से जो रचनाएं अति उत्तम लगीं, वो हैं- धन्यवाद पापा, जय हो हिंदुस्तान की, संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत की स्थायी सदस्यता, स्कूल की कुछ यादें, डायरी, मैं माँ हूं तथा सपने और दुनिया आदि।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ञवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिये बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,
व. लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

सी.जी.ओ.कम्प्लेक्स,डी.एफ.ब्लॉक, साल्ट लेक,कोलकाता- 700 064
3rd MSO Building, 5th Floor, CGO Complex, DF Block, Salt Lake, Kolkata - 700 064.
Phone: (033) 2337-4916; FAX: (033) 2337-7854, e-mail: agauwestbengal2@cag.gov.in

E-NO/1906191/Admin
28 MAY 2024

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज - 211001
REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001
Phone : 2421364, 2421063, 2624467 Fax : 0532-2423485

पत्रांक - क्षे.क्ष.नि.ज्ञा.सं.(प्र.)/पत्रिका पावती(132)/2024-25/ 80 **दिनांक : 20.05.2024**

सेवा में,

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय- महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
महाराष्ट्र, मुंबई - 400051

विषयः- हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 15वें अंक की पावती।

संदर्भः- पत्रांक डीजीसीए/प्रशा./का.प./2/43 दिनांक 26.04.2024

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' का 15वां अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए सादर धन्यवाद ।

पत्रिका का सादगीपूर्ण एवं आकर्षक है। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं प्रशंसनीय हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी पत्रिका हिंदी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। लेखों में विशेषकर **'धन्यवाद पापा', 'जय हो हिंदुस्तान की', 'डायरी', 'समय'** एवं **'सपने और दुनियां'** पठनीय, रुचिकर एवं सराहनीय हैं। यह पत्रिका निस्संदेह प्रभावशाली है। इसके भविष्य की सफलता के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के बेहतरीन संपादन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारो को हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/सलाहकार

E-NO/1893352/Admn
22 MAY 2024

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा,
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
ए.जी.सी.आर, भवन, आई.पी. एस्टेट,
नई दिल्ली-110 002

OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT,
INDUSTRY AND CORPORATE AFFAIRS
A.G.C.R. BUILDING I.P. ESTATE,
NEW DELHI-110 002

सं. प्रशा/रा.भा./बाह्य पत्रि./23/2023-24/11 **दिनांक** 07.05.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(प्रशासन)
भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
सी-25 लेखापरीक्षा भवन 8 वां तल बान्द्रा-कुर्ला परिसर
मुंबई-400051

विषयः हिंदी गृह पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 15 वें अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" क 15 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। इस पत्रिका मे प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर,भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियो के छायाचित्र भी मनमोहक है।

श्रीमती स्वपना फुलपाडिया की "धन्यवाद पापा", श्री जयराम सिहं की "आँचल", श्री इमरान खटीक की "डायरी", श्री रवि कुमार की "समय", श्री सचिन चौहन की "सपने और दुनिया" रचनाएं विशेष रूप से प्रशंसनीय है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

E-NO/1893211/Admn
22 MAY 2024

भवदीय

संपादक एवं हिंदी अधिकारी

दूरभाष / Phone : +91-11-23702357, फैक्स / Fax : +91-11-23702359, E-mail : pdaica@cag.gov.in

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय, तिरुवनंतपुरम
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E), KERALA,
THIRUVANANTHAPURAM - 695 001

सं. हिंदी कक्ष/पत्रिका समीक्षा/2024-25/032060/014 दिनांक 09.05.2024

सेवा में

हिंदी अधिकारी
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई – 400 051

महोदय/महोदया,

विषय : हिंदी ई-पत्रिका **'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय'** के 15वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

संदर्भ : पत्र सं.डीजीसीए/प्रशा/का.प./2/43 दिनांक 26.04.2024

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका **'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय'** के 15वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुडे सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका **'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय'** की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

हिंदी अधिकारी

E-NO/1871003/Admn
14 MAY 2024

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी , सैक्टर 17 -ई, चंडीगढ़ - 160017.
Office of The Accountant General (A&E),
Punjab & U.T., Sector-17 E,
Chandigarh – 160017.

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

Phone: 0172-2702906, 2703117, 2709576, **Fax** – 0172-2702286
Mail: agaepunjab@cag.gov.in

आज़ादी का अमृत महोत्सव

क्रमांक - हिंदी कक्ष/समीक्षा/10/2024-25/54 दिनांक-03.05.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी,कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यक लेखापरीक्षा,
सी-25,ऑडिट भवन,8वां तल ,
बांद्रा कुर्ला, काम्प्लेक्स,बांद्रा(पूर्व) मुंबई-400051

विषय - विभागीय हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 15वें अंक की पावती के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 15वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों के छायाचित्र भी मनमोहक हैं।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए हैं। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

E-NO/186601/Admn
13 MAY 2024

भवदीय

वरिष्ठ लेखा अधिकारी/हिंदी

भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) छत्तीसगढ़, रायपुर
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of Principal Accountant General (Audit) Chhattisgarh, Raipur

दिनांक : 01-05-2024
Date :

क्र./हिन्दी कक्ष/पावती/2023-24/जा.- 316

प्रति ,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यक लेखापरीक्षा, मुंबई
ऑडिट भवन, बांद्रा-कुर्ला, मुंबई-400051

विषय:- तिमाही हिंदी ई-पत्रिका **"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय"** के 15वें संस्करण का प्रेषण।
संदर्भ :- सं.डी.जी.सी.ए/प्रशा./का.प./2/88 दिनांक 26-04-2024

महोदय/महोदया

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका **"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय"** के 15वें संस्करण की ई पत्रिका प्राप्त हुई। पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणा दायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

E-No/186686 8/Admn
13 MAY 2024

(जितेन्द्र कुमार अग्रवाल)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी कक्ष

पोस्ट - विधानसभा, जीरो प्वाइंट, रायपुर - 492005 (छत्तीसगढ़)
Post - Vidhansabha, Zero Point, Raipur - 492005 (Chhattisgarh)
फोन/Phone : 0771-2281401 • फैक्स/Fax : 2582505 • ईमेल/Email : agauchhattisgarh@cag.gov.in

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) लखनऊ
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
Office of the Principal Director of Audit (Central) Lucknow

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई, 400051

विषय:- तिमाही हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वें अंक की ई-प्रति - के सम्बन्ध में I

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वें अंक की ई- प्रति प्राप्त हुई है I एतदर्थ धन्यवाद | पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है |

पत्रिका का यह अंक साज-सज्जा एवं मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक एवं मनोहारी बन पड़ा है साथ ही पत्रिका में समाविष्ट रचना "समय" एवं "सिटी ऑफ जॉय" बहुत ही प्रेरक एवं रुचिकर हैं तथा "आंचल" अत्यंत हृदयस्पर्शी हैं| पत्रिका में समाविष्ट अन्य सभी रचनायें अत्यंत प्रेरक, रुचिकर एवं ज्ञानवर्धक है I पत्रिका के प्रकाशन हेतु संपादक मंडल एवं रचनाकारों का हार्दिक अभिनन्दन एवं शुभकामनाएँ
I

भवदीय,

Signed by Rajesh Kumar Swyambhu
Date: 13-05-2024 17:10:50
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

E-No/187930 7/Admn
16 MAY 2024

तृतीय तल, ऑडिट भवन, टी॰सी॰-35-वी-1, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (उ॰प्र॰) दूरभाष :0522-2970789, फैक्स :0522-2970780 (प.नि.)
3rd Floor, Audit Bhawan, T.C.-35-V-1, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow-226010 (U.P.) Phone: 0522-2970789, Fax: 0522-2970780 (PD)

(5)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171 003
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सं. हिं.क./ले.व ह./पत्रिका समीक्षा/2024-25/48 दिनांक-03-05-2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
सी-25, ऑडिट भवन, आठवी मंजिल,
बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स, मुंबई-400 051

विषय : आपके द्वारा प्रेषित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वें संस्करण की ई प्रति की पावती।

महोदय/महोदया,

उपरोक्त विषय पर आपके द्वारा प्रेषित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वें संस्करण की ई-प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका प्रयास सराहनीय है जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएँ।

भवदीय,
PAWAN KUMAR
DATA MANAGER

E-NO/1893171/Admn
22 MAY 2024

गार्टन कैसल बिल्डिंग, शिमला- 171 003 दूरभाष: 0177-2614935, फैक्स: 0177-28149
Gorton Castle Building, Shimla-171 003 Phone: 0177-2614935, Fax: 0177-281493
E-mail:agaeHimachalpradesh@cag.gov.in

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर

क्रमांक: रा.भा.अ./फाइल सं.-एच-11005-02/2023-24/ 18 दिनांक: 07.05.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई-400051

विषय: तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वें अंक पर अभिमत - संबंधित।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित **तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वें अंक** की प्रति की प्राप्ति हुई है। आपकी पत्रिका के आकर्षक आवरण पृष्ठ के साथ-साथ इसकी साज-सज्जा सुंदर है और रचनाओं की विषयवस्तु भी प्रशंसनीय है।

"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई तथा पत्रिका की प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

हिंदी अधिकारी
(ई-मेल-rajbhasha.raj2.au@cag.gov.in)

E-NO/1860973/Admn
10 MAY 2024

1

रा.अ./एच-11005/02/पी-2/2021-22 (Computer No. 44556)
...ted from eOffice by SARANSH GUPTA , JR. TRANS(RAJBHASHA)SG, JUNIOR HINDI TRANSLATOR, AG-(AUDIT-II)-RAJASTHAN on 01/05/2024 11:11 AM

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), तमिलनाडु
"लेखापरीक्षा भवन" 361,अण्णा सालै, तेनाम्पेट, चेन्नै - 600 018.
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I), TAMIL NADU
"LEKHA PARIKSHA BHAVAN" 361, Anna Salai, Teynampet, Chennai - 600 018.

सं/ No.
सं . प्र.मले. (लेप-I)/हिं. अनु./प्रशं. पत्र/14-02/2024-25/12 दि.:06.05.2024

सेवा में
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
मुंबई-400051

महोदय,

विषय- हिन्दी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" पर अभिमत

हमें आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित ***लेखापरीक्षा ज्ञानोदय"*** के 15 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। राजभाषा हिन्दी के विकास में पत्रिका के माध्यम से किया गया यह प्रयास अत्यंत ही प्रशंसनीय है। पत्रिका में सभी रचनाएं अत्यंत रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। विशेषकर **जय हो हिंदुस्तान की, सिटी ऑफ जॉय, डायरी, मैं माँ हूँ...., सपने और दुनिया** आदि रचनाएं विशेष रूप से सराहनीय हैं। कार्यालय के विभिन्न गतिविधियों व कार्यक्रमों से संबंधित छायाचित्रों का प्रस्तुतीकरण भी अत्यंत सराहनीय है। । पत्रिका की साजसज्जा भी अत्यंत मनोहारी और प्रशंसनीय है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ पत्रिका के कुशल संपादन एवं प्रकाशन के लिए संपादन मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

सधन्यवाद,

भवदीया
हिन्दी अधिकारी

E-NO/1860916/Admn
10 MAY 2024

दूरभाष / Phone : 044 - 2431 6400 फैक्स / Fax : 044 - 2433 0012

दूरभाष/Telephone–0612-2225634 ई-मेल/E-mail–agaebihar@cag.gov.in
फैक्स/Fax 0612-2221056 वेबसाइट/Website- https://cag.gov.in/ae/bihar/en

महालेखाकार (ले० एवं ह०) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL(A&E), BIHAR, PATNA

पत्रांक-हिं.अ./ले. व हक./5/पत्रिका प्रतिभाव/24-25/16
दिनांक 08 .05.2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई-400051

विषय: कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वें अंक की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की राजभाषा पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वें अंक की सॉफ्ट कॉपी हमें प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अत्यंत ही मनमोहक है। पत्रिका विभिन्न विधाओं में लिखी गई स्वरचित रचनाओं का सुंदर संग्रह है, जिसमें संस्मरण, लेख, कविताएँ आदि शामिल हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक की भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई का पात्र हैं। पत्रिका के सतत प्रकाशन एवं उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

E-NO/1861033/Admn
1861033
10 MAY 2024

भवदीय,

सुनील कुमार
हिंदी अधिकारी/हिंदी अनुभाग

वीरचद पटेल पथ, पटना-800001 Veerchand Patel Path, Patna-800001

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, नर्मदापुरम रोड, भोपाल- 462011

क्र.हि.क./फा-7/ जावक - 10 दिनांक02.05.2024

प्रति,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई-400051

विषय : तिमाही हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वें अंक पावती बाबत ।
संदर्भ : आपके पत्र स.डी.जी.सीए/प्रशा./का .प./2/ 43 दिनांक 26.04.2024 ।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद । पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर हिन्दी मुहावरों पर आधारित लेख, संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत की स्थाई सदस्यता, सिटी ऑफ जॉय, स्कूल की कुछ यादें, समय, आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम हैं। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष

E-No/1860855/Admn
10 MAY 2024

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), पंजाब, चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) PUNJAB, CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-2783168, फैक्स 0172-2703149

सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

क्रमांक- हि.क./हिंदीपत्रिकासमीक्षा/2024-25/I/608085/2024 दिनांक:07-05-2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई-400051

विषयः तिमाही हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वें संस्करण की समीक्षा।

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं विशेष तौर पर श्री अरुण कुमार साव की "सिटी ऑफ जॉय", श्री शरद धनगर की "स्कूल की कुछ यादें", श्री सचिन चौहान की "सपने और दुनिया" एवं सुश्री पूजा साव की "जय हो हिन्दुस्तान की" आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं ।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम हैं । कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है । पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएँ ।

भवदीया,

EKTA

(हिंदी अधिकारी)

E-No/1860665/Admn
10 MAY 2024

Signed by Ekta
Date: 07-05-2024 16:19:53

Email **Admin Section PDCA Mumbai**

हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 15वें अंक की प्राप्ति – के संबंध में।

From : Hindi Cell PDA C Bengaluru
<hindicellpdc.kar1.au@cag.gov.in>
Thu, May 02, 2024 04:47 PM

Subject : हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 15वें अंक की प्राप्ति – के संबंध में।

To : Admin Section PDCA Mumbai
<admin.mum.pdca@cag.gov.in>

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 15वें अंक की प्राप्ति हुई, धन्यवाद। पत्रिका का मुख-पृष्ठ, साज-सज्जा तथा विषयों की प्रस्तुति का ढंग अत्यंत सुंदर है। प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक व उच्च कोटि की हैं। इसके अलावा पत्रिका में सम्मिलित तस्वीरें इस पत्रिका को और अधिक आकर्षक बनाती हैं। साथ ही, मौलिक सोच तथा सृजनात्मकता की सुंदर अभिव्यक्ति इसमें दृष्टिगत होती हैं।

राजभाषा हिंदी की प्रगति में 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' इसी तरह सतत योगदान देती रहे, इसी सुभकामना के साथ समस्त रचनाकारों एवं संपादक मंडल को ढेर सारी बधाइयां एवं शुभकामनाएं।

--

धन्यवाद सहित

राजभाषा अनुभाग
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
बेंगलूरु

Rajbhasha Anubhag
Principal Director of Audit (Central)
Bengaluru

Azadi Ka Amrit Mahotsav

विद्या 10/5/24

E-No/1860719/Ad

10 MAY 2024

कार्यालय प्रधान महालेखाकार(लेखापरीक्षा-II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी,
लेखापरीक्षा भवन, 361, अण्णा सालई, तेनामपेट, चेन्नई – 018 600

सं प्र.मले.(लेप-II.)/हि.अ./7-38/ अभिस्वीकृति /2024-25/10 दिनांक: 30.04.2024.

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन).
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई-51

विषयः तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "**लेखापरीक्षा ज्ञानोदय**" के 15वें अंक की अभिस्वीकृति ।

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "**लेखापरीक्षा ज्ञानोदय**" के 15वें अंक की प्रति प्राप्त हुई । बहुत-बहुत धन्यवाद ।

पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं पठनीय एवं रोचक हैं । सुश्री पूजा साव की कविता 'जय हो हिन्दुस्तान की ', श्री. अरुण कुमार साव का लेख 'सिटी ऑफ जॉय ' एवं सुश्री फातेमा हवेलीवाला की कविता ' मैं माँ हूँ ' बहुत ही सराहनीय हैं । सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल प्रशंसा के पात्र हैं। पत्रिका की बहुमुखी विकास के लिए हमारी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,

(वी. चित्रा)
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार(लेखापरीक्षा-II),
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE PR. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

संख्या/No.: हिंदी कक्ष/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2024-25/53 दिनांक/Dated:29.04.2024

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी(प्रशासन)

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा

मुंबई

विषय: तिमाही हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वे संस्करण का प्रेषण।

महोदय,

दिनांक 26.04.2024 को आपके कार्यालय की तिमाही हिन्दी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 15वे संस्करण की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ भी अति सुंदर है। जय हो हिंदुस्तान की, सिटी ऑफ़ जॉय, मैं माँ हूँ, स्कूल की कुछ यादें आदि रचनाएं विशेष रूप से ज्ञानवर्धक, पठनीय एवं रुचिकर हैं। उत्तम संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय

हिंदी अधिकारी
(हिंदी कक्ष)

कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II,
महाराष्ट्र, नागपुर
O/o the Principal Accountant General (Audit)-II,
Maharashtra, Nagpur-440001

सं.हिंदी अनुभाग/प्रतिक्रिया/22/2024-25/जा.क्र. दिनांक: - /04/2024

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ प्रशासन
कार्यालय- महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
महाराष्ट्र, मुंबई- 400051

विषय:- हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वें अंक की प्रतिक्रिया के संबंध में ।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 15वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर निम्नलिखित रचनाएँ उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं।

क्रं	नाम एवं पदनाम	रचनाएँ
1.	श्री जयराम सिंह, क. अनुवादक	आँचल
2.	श्री अरुण कुमार साव, क. अनुवादक	सिटी ऑफ जॉय
3.	श्री रवि कुमार, ले.प.	समय
4.	श्री सचिन चौहान, ले.प.	सपने और दुनिया

पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,
PRIYANKA GOSWAMI

हिंदी अधिकारी